Historicity Research Journal
Volume 1 | Issue 9 | May 2015 ISSN:- 2393-8900

Research Article

डॉ. नीरजा माधव की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय पात्रों का प्रेम संबंध

सुरैय्या इसुफअल्ली शेख

असो.प्रोफेसर तथा शोध निर्देशक, अध्यक्षा हिन्दी विभाग,
मा.ह.महाडीक कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय मोडनिंब ता.माढा जि.सोलापुर.

सारांश :

साधारण जन प्रेम से ही बढ़ते हैं और प्रेम से ही सबको बढ़ाते हैं। अगर प्रेम रूपी आनंद न हो तो जीव-लोक नष्ट हो जाता है। प्रेम ही स्वार्थ का कारण है और वह स्वार्थ के त्याग में भी है। अगर प्रेम रस न हो तो मानव-मानव में जो अंतर है, वह न हो। प्रेमांकुर कब, कहाँ, कैसे पल्लवित हो जाए कोई नहीं जान सकता। कई बार तो एक-दूसरे को जाने-पहचाने बिना ही यह शुरू हो जाता है और इसकी अंतिम परिजति बड़ी ही सुखद होती है।

प्रस्तावना :

मध्यमवर्गीय युवक-युवतियों में आजकल प्रेम विवाह की प्रवृत्ति खूब बढ़ती जा रही है। आजादी के बाद देश में शिक्षा की लहर बड़ी तेजी से आ गई। अनेक मध्यवर्गीय युवक-युवतियों ने उच्च शिक्षा प्राप्त की, परिणाम स्वरूप उन्हें अपने जीवन साथी के चुनाव का निर्णय लेने तथा माँ-बाप द्वारा आयोजित विवाह का विरोध करने की क्षमता प्राप्त हुई। डॉ.नीरजा माधव की कुछ युवक-युवतियों के प्रेम की परिणति विवाह में हो पाई है तो कुछ को इसमें असफलता प्राप्त हुई है। ऐसी ही कुछ नीरजा माधव की चुनींदा कहानियों की चर्चा यहाँ पर हम कर रहे हैं।

१.अनुगूँज :

'अनुगूँज' कहानी में 'समीर' आकाशवाणी में उद्घोषक के रूप में कार्यरत है। श्रोता केवल उसकी आवाज ही सुन पाते हैं परंतु एक समीर की आवाज से इतना प्रभावित होती है कि वह बिना देखे ही अपने एक तरफ प्यार का इजहार कर देती है। एक दिन अचानक समीर के कार्यालय में एक व्यक्ति आकर गिड़गिड़ाता है कि उसकी बेटी अस्पताल में भर्ती है और उसका रक्त ग्रुप एबी पॉजिटिव हैं। कृपया यह सूचना आप रेडियो से प्रसारित कर दें। समीर उस वृद्ध को आश्वासन देकर भेज देता है। तभी उसे ध्यान आता है कि उसका रक्त ग्रुप एबी पॉजिटिव हैं। वह अपने अधिकारी से इस विषय में चर्चा करता है कि कार्यक्रम समाप्त होने से पहले ही वापस आ जाएगा इस प्रकार लड़की की जान भी बच जाएगी और किसी प्रकार की समस्या भी नहीं आएगी। अस्पताल में पहुँचकर समीर वृद्ध से मिलकर सारी बात बताता है और तत्काल अपने खून देने की पेशकश करता है। इस सबसे मुक्त होने में समीर को वक्त लग जाता है और वह ऑफिस समय पर नहीं पहुँच पाता और वहाँ से उसे निलंबित किया जाता है। अचानक एक दिन वही लड़की समीर के घर पहुँच जाती है और बताती है कि उसे समीर से मिलना है। बातचीत में लड़की को सारी बात पता चलती है तो उसे समझाता है कि मानवीय संवेदनाओं की ही जीत होगी। चलते वक्त जब लड़की बताती है कि मैं ही अनुगूँज हूँ उसकी आवाज की अनुगूँज समीर के हृदय को गुदगुदा जाती है आज के समय में ऐसे प्रेमी भी मिल जाते है जो शक्ल-सुरत से ज्यादा सीरत की कद्र करते है। ऐसी ही प्रेम की कहानी है 'अनुगूँज'।

1. **इतना सा सच :**

आज के समय में गृहस्थी को सुचारु रूप से चलाने के लिए पति-पत्नी दोनों का ही नौकरपेशा होना जरूरी है। नौकरी करते हुए दोनों को एक दूसरे पर विश्वास भी करना चाहिए अन्यथा शक की दीवार बसे बसाए घर को उजाड़ देती है। 'इतना सा सच' में इमरान अपनी नीलोफर पर न जाने क्यों शक करने लगता है परंतु जब उसका शक दूर होता है तो वह कहता है, ''नीलोफर, इस तरह के शक में कितनी जिंदगियाँ उजड़ जाती हैं न? अपने-अपने स्वाभिमान में जकड़े वे लोग एक दूसरे से स्पष्टीकरण लिए ही दूर खिंचते चले जाते हैं और फिर होता है'बिखराव'। संबंधों की मधुरता और निर्वाह के लिए दोनों ही पक्षों का उदार और स्पष्ट होना आवश्यक होता है, अन्यथा शक का एक छोटा-सा दीमक भी उसे धीरे-धीरे चाटकर खत्म कर देता है।''१

2. वह नहीं तो यह :

इस कहानी में डॉ.संध्या सक्सेना प्रशासनिक अधिकारी है। उसके पति आनंददेव एक साधारण एकाउन्टेन्ट थे। स्वाभाविक है कि पद की वजह से दोनों के बीच कहीं न कहीं तनाव उत्पन्न हो और यह तनाव पूरे घर को बर्बादी के कगार पर लाकर खड़ा कर देता है। आनंद देव नशे का सेवन करने लगते हैं। वे पत्नी के सामने स्वयं को नीचा नहीं देखना चाहते। स्वयं डॉ.संध्या सक्सेना के शब्दों में, ''कितनी स्वाभाविक सी है यह बात किसी पुरुष के लिए। पत्नी के सामने वह स्वयं को नीचा नहीं देखना चाहता।''२ परिणाम यह होता है कि आनंद देव को मेंटल हॉस्पीटल में भर्ती करना पड़ता है और बेटे गौरव को पढ़ाई के लिए घर से दूर रखना पड़ता है। इस तरह परिवार टूकड़ो में विभाजित हो जाता है।

3. हव्वा :

'हव्वा' कहानी में नैना एक कार्यालय में कार्य करने वाली महिला है। वह सबसे दूरी बनाकर रखती है परंतु काम के सिलसिले में एक-दूसरे से संपर्क बनाना पड़ता है। लोग उसे बदनाम करने की कोशिश करते हैं। नैना के पति अरुण घर पर नहीं हैं यह देख बॉस फूलचंद अपने एक दोस्त के साथ नैना के घर आ जाते हैं। इस बात से नैना और उसके पति बौखला उठते हैं। नैना ऑफिस के एक कर्मचारी पवन की आड़ लेकर बॉस की हरकतों से मुक्ति पाना चाहती है। उसे महसूस होता है कि पवन का सहारा लेकर वह अपने पति की भावनाओं को धोका दे रही है। ये चीजें उसके दिमाग पर इतनी हावी हो जाती हैं कि रात को पति की बाँहो में भी उसके मुँह से किसी दूसरे का नाम सुनकर अचानक उसका पति चौंक जाता है।

4. हवाओं पर लिखी पाती :

'हवाओं पर लिखी पाती' शुभांगी की कशमकश की हृदयस्पर्शी कथा है। शुभांगी की मोटी आवाज ही उसके विवाह में रोड़ा बन जाती है। अचानक ही एक रिश्ता आता है और लड़केवाले शुभांगी को पसंद कर लेते हैं। इसकी वजह यह है कि लड़का भारतीय सेना में है और उसकी माँ को ड़र है कि कहीं युद्ध में वह मारा न जाए। यही सोचकर वह उसकी शादी करना चाहती है। शुभांगी मन ही मन सोचती है कि ऐसे कायर पुरुष से क्या विवाह करना जो मौत की ड़र से युद्ध क्षेत्र को पीठ दिखाकर भाग रहा है। ऐसे में उसकी माँ उसे एक लिफाफा दे जाती हैं। जब वह उसे खोलती है तो उसे एक पत्र मिलता है। वह पत्र लेफ्टिनेट कार्तिकेय द्वारा लिखा गया है। उसे पढ़ने के उपरांत शुभांगी की सभी शंकाओं का समाधान हो जाता है और वह भी चाहती है कि उसका पति युद्ध में विजय प्राप्त कर लौटे।

5. सुभद्रा का चक्रव्यूह :

आज के युग में नारी के लिए अपना कैरिअर कितना महत्त्वपूर्ण है यह बात 'सुभद्रा का चक्रव्यूह ' कहानी से पता चलती है। कहानी की नायिका नीहारिका एक अथलीट है। सिद्धार्थ आकाशवाणी की ओर से खेल का आँखो देखा हाल कमेंट्री करते हैं। बाद में दोनों की शादी हो जाती है। विवाह के छ:महीने बाद ही वह प्रेगनेंट हो जाती हैं। नीहारिका को तीसरा महिना पूरा हो रहा था। नीहारिका एबार्शन करवाना चाहती है इसलिए वह डॉ.निशि से कहती है कि ''देख निशि तू तो जानती है अपने करियर से भी उतना ही मोह रखती हूँ जितना सिद्धार्थ को चाहती हूँ।''३ नीहारिका का एबार्शन हो जाता है और वह प्रतियोगिता में हिस्सा भी लेती है। दौड़ में वह प्रथम आ जाती है लेकिन अपने बच्चे को खो देने के कारण वह सिद्धार्थ को पकड़कर रो पड़ती है।

6. तूफान आनेवाला है :

'तूफान आनेवाला है' यह सीमा और रंजन की प्रेम कहानी है। सीमा यह एक धर्मेतर लड़की है और वह हिंदू धर्म के रंजन से प्यार करती है। उसके पिताजी ने तीन-तीन बार ब्याह रचा था। अपनी पत्नी को वे पीटते भी थे। इस बात की सीमा को चीढ़ आती थी। वह आवाज उठाना चाहती थी, उसके शब्दों में, ''सच कह रहे हो तुम! हमारी ही कोख-से जन्म लेनेवाले हमें सदियों से अपवित्र मानकर हमारे सह-अस्तित्व को नकारते रहे हैं और हम चुपचाप सब सहन करते हैं। हमें आवाज उठाने का भी अधिकार नहीं मिला? हमें इसलिए दुनिया देखने से वंचित किया जाता है कि कहीं अपने अधिकारों के लिए हम एक स्वर एक मत न हो जाँए।''४ रंजन कदम-कदम पर उसका साथ देता है और उसे ढ़ाढ़स बँधाता है। दोनों एक मंदिर में जाकर शादी भी कर लेते है। रंजन को भी पता है उसके परिवार वालें इस बात का विरोध करेंगे लेकिन उसे इस बात की कोई परवाह नहीं है।

7. इसलिए भी :

इसलिए भी यह कमली और लल्लन के प्यार की कहानी है। कमली खादिम के यहाँ नाच-गाने का काम करती है। वह अपने गाँव को छोड़ चूकी है। इसलिए वह अपने गाँव में नाचने के लिए जाना नहीं चाहती लेकिन उसे एक बार अपने गाँव में जाना ही पड़ता है। रास्ते में वह अपने अतीत में खो जाती है। वह लल्लन को चाहती थी और उससे शादी भी करना चाहती थी। लेकिन लल्लन अनाथ होने के कारण माई शादी के लिए विरोध करती है। एक बार उसे चार महिने से मासिक पीड़ा नहीं हुई थी तो माई के ड़र से वह गाँव छोड़कर चली जाती है। डॉक्टर से कमली तसल्ली करवा लेती है कि वह पेट से नहीं है। बहुत सालों बाद जब वह आज गाँव पहुँच गई है तो उसे अपने गाँववालों का ड़र सता रहा है। किसी शादी में लल्लन गिर पड़ता है और उसकी मृत्यु होती है। कमली अपने आप को लल्लन की विधवा बताती है। उसकी माई भी उसे पहचान लेती है।

निष्कर्ष:

डॉ.नीरजा माधव की कहानियों के पात्र हमारे आस-पास के आम आदमी ही प्रतीत होते हैं। कहानियों में कल्पना कम यथार्थ का पुट व्यापक मात्रा में देखने को मिलता है। कहानियों की भाषा सहज सरल और रोचक है। नारी होने के कारण लेखिका ने नारी-मन के अंतर्द्वंद्व की गुत्थियाँ को भली-भाँति प्रस्तुत किया है। यही इन कहानियों की विशेषता है।

संदर्भ:

१. डॉ.अनिल कुमार- नीरजा माधव प्रेम संबंधों की कहानियॉ-पृ.५६
२. डॉ.अनिल कुमार- नीरजा माधव प्रेम संबंधो की कहानियाँ-पृ.२३
३. डॉ.अनिल कुमार- नीरजा माधव प्रेम संबंधो की कहानियाँ पृ.३६
४. डॉ.अनिल कुमार- नीरजा माधव प्रेम संबंधो की कहानियाँ पृ.११७

५. *डॉ.नीरजा माधव - अनुगूँज*
६. *डॉ.नीरजा माधव - हव्वा*
७. *डॉ.नीरजा माधव - हवाओं पर लिखी पाती*
८. *डॉ.नीरजा माधव - इसलिए भी*
९. *डॉ.अर्जुन चव्हाण- राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्ग*
१०. *डॉ.सुधा सिंह- अमृतराय का कथा साहित्य मध्यवर्गीय जीवन*

सुरैय्या इसुफअल्ली शेख
असो.प्रोफेसर तथा शोध निर्देशक, अध्यक्षा हिन्दी विभाग , मा.ह.महाडीक कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय मोडनिंब ता.माढा जि.सोलापुर.